Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MHI - 108

भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय इतिहास

(Environmental Histories of the Indian Subcontinent)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय इतिहास
(Environmental Histories of the Indian Subcontinent)

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

Sample Question Paper–4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड–1 : पर्यावरणीय इतिहास लेखन (Writing Environmental History)

1. अंत:विषयक दृष्टिकोण (Inter-disciplinary Approaches) 1
2. प्रकृति और महिलाएं (Nature and Women) 6
3. स्रोतों की विविधता : अभिलेखीय (Variety of Sources: Archival) 12
4. स्रोतों की विविधता : पुरातात्विक (Variety of Sources: Archaeological) 18
5. स्रोतों की विविधता : भौतिक संस्कृति (Variety of Sources: Material Culture) 23
6. विविध ज्ञान प्रणालियाँ (Varied Knowledge Systems) 30

खण्ड–2 : पुरा–पर्यावरण (Paleo-Environments)

7. पुरा–पर्यावरण और अनुकूलन (Paleo-Environments and Adaptations) 37

खण्ड–3 : मानसून पारिस्थितिकी (Monsoon Ecologies)

8. नदी तटीय, डेल्टा और दोआब (Riparian, Deltaic and Doab) 42
9. जंगल और भोजन संग्राहक; पवित्र कुंज (Forests and Foragers; Sacred Groves) 48

खण्ड–4 : कृषक–पशुपालक व्यवस्था (Agro-Pastoral Regimes)

10. शुष्क और अर्ध–शुष्क परिदृश्य : घास के मैदान, रेगिस्तान 54
    (Arid and Semi-arid Landscapes: Grasslands, Deserts)
11. पहाड़ियाँ और पर्वत (Hills and Mountains) 61
12. डेल्टाई क्षेत्र और तटीय भू–भाग 66
    (Deltaic Regions and Coastal Terrains)
13. पशु शक्ति और सत्ता के प्रतीक के रूप में पशु 70
    (Animal Energy and Animals as Symbols of Power)
14. शिकार और बारूद (Shikar and Gunpowder) 74

खण्ड-5 : औपनिवेशिक काल में कृषि व्यवस्था (Agrarian Regimes Under Colonial Rule)

15. भू-उपयोग में परिवर्तन (Changing Land Use) 78
16. वनों की कटाई, पुनः वनरोपण और वनीकरण 84
(Deforestation, Reforestation and Afforestation)

खण्ड-6 : वैश्विक अन्तःसंबंधन (Global Connections)

17. प्रकृति, पूंजी और साम्राज्यवाद-I (Nature, Capital and Imperialism-I) 89
18. प्रकृति, पूंजी और साम्राज्यवाद-II (Nature, Capital and Imperialism-II) 95
19. औद्योगिक कृषि (Industrial Agriculture) 100

खण्ड-7 : प्रकृति पर नियंत्रण और संरक्षण (Control and Conservation of Nature)

20. आजीविका की हानि और पलायन (Loss of Livelihood and Migrations) 105
21. वन संरक्षण (Forest Conservation) 109
22. राष्ट्रीय उद्यान और प्राणी उद्यान (National Parks and Zoological Parks) 114
23. खनन (Mining) 118

खण्ड-8 : जलीय परिदृश्य (Waterscapes)

24. सिंचाई : कैनाल कॉलोनी (Irrigation: Canal Colonies) 123
25. आर्द्र भूमि (Wetlands) 127
26. बड़े बांध और विस्थापन (Big Dams and Displacement) 131
27. मत्स्य पालन (Fisheries) 135

खण्ड-9 : शहरीय इलाके (Urban Spaces)

28. विजयनगर (Vijayanagara) 141
29. दिल्ली के शहर (Cities of Delhi) 145
30. कोलकाता और बृहन्-मुंबई (Kolkata and Brihan-Mumbai) 150
31. जोधपुर और जैसलमेर (Jodhpur and Jaisalmer) 156

खण्ड-10 : एन्थ्रोपोसीन का क्षेत्रीयकरण (Provincialising the Anthropocene)

32. नई ऊर्जा व्यवस्थाएं (New Energy Regimes) 160
33. मानव-वन्यजीव के बढ़ते संघर्ष (Growing Human-Wildlife Conflicts) 164
34. प्राकृतिक आपदाएँ (Natural Calamities) 170
35. औद्योगिक प्रदूषण और आपदाएँ (Industrial Pollution and Disasters) 175
36. जलवायु परिवर्तन (Climate Change) 179

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय इतिहास

(Environmental Histories of the Indian Subcontinent)

MHI-108

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. पर्यावरण प्रॉक्सी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-20, प्रश्न 2

प्रश्न 2. भू-विज्ञान ने मानव बस्तियों और सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-39, प्रश्न 3

प्रश्न 3. डेल्टाई परिदृश्यों के संबंध में मानव-प्रकृति अंत:क्रिया का मूल्यांकन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-68, प्रश्न 4

प्रश्न 4. औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में कृषि के व्यवसायीकरण के किसानों पर पड़े प्रभाव पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-79, प्रश्न 1

प्रश्न 5. जलवायु परिस्थितियों के प्रति उत्तर में मौसमी प्रवास कई समुदायों की आजीविका का अभिन्न अंग रहा है। टिप्पणी करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-106, प्रश्न 2

प्रश्न 6. पूर्व-आधुनिक युग के दौरान राज्य गठन के उद्‌भव और सुदृढीकरण में खनिजों के महत्त्व पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-120, प्रश्न 3

प्रश्न 7. क्या उपमहाद्वीप के इतिहास में आर्द्रभूमि एक अस्थायी क्षेत्र थे? मूल्यांकन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-128, प्रश्न 2

प्रश्न 8. जैसलमेर क्षेत्र में कृषि के विस्तार में खड़ीन के महत्त्व पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-31, पृष्ठ-158, प्रश्न 3

प्रश्न 9. भोपाल गैस त्रासदी के बाद क्या सबक सीखे गए?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-35, पृष्ठ-177, प्रश्न 4

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) पर्यावरणीय संकट और आगे का मार्ग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2

(ख) डेल्टा और दोआब

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-43, प्रश्न 1

(ग) तटीय मत्स्य पालन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-27, पृष्ठ-135, 'तटीय मत्स्य पालन'

(घ) जलवायु परिवर्तन के प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-36, पृष्ठ-180, प्रश्न 1

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय इतिहास
(Environmental Histories of the Indian Subcontinent)

MHI-108

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. क्या आप सहमत हैं कि पर्यावरणीय इतिहास अंत:विषयक है? उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से जाँचें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 1

प्रश्न 2. मैक्रो बोटैनिकल अवशेषों पर एक नोट लिखें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-28, प्रश्न 5

प्रश्न 3. रेगिस्तानों और घास के मैदानों में खानाबदोश राज्यों के विकास के पैटर्न क्या हैं? उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-57, प्रश्न 4

प्रश्न 4. पशु ऊर्जा का दोहन करने के लिए तकनीकी विकास पर एक लेख लिखें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-72, प्रश्न 3

प्रश्न 5. 'जैविक युद्ध' शब्द की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-93, प्रश्न 5

प्रश्न 6. 1947 के बाद की अवधि में भारत में जंगली जानवरों के संरक्षण एवं संरक्षण के संबंध में की गई कुछ महत्त्वपूर्ण पहलों पर विस्तार से चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-116, प्रश्न 4

प्रश्न 7. जल के उपयोग और बड़े बाँध परियोजनाओं के फलस्वरूप किसान जनसंख्या के विस्थापन पर सामाजिक संघर्ष की प्रकृति पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-26, पृष्ठ-133, प्रश्न 3

प्रश्न 8. कोलकाता की पारिस्थितिकी के प्रबंधन में औपनिवेशिक ज्ञान प्रणाली प्रणाली की भूमिका पर चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-30, पृष्ठ-152, प्रश्न 2

प्रश्न 9. 'सह-अस्तित्व की अपनी परिभाषा लिखें। भारत में सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के विचार पर विस्तार से चर्चा करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-33, पृष्ठ-167, प्रश्न 3

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) अभिलेखागार का अर्थ एवं प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-12, 'अभिलेखागार का अर्थ एवं प्रकार'

(ख) भारतीय और पश्चिमी ज्ञान प्रणालियां

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-30, 'भारतीय और पश्चिमी ज्ञान प्रणालियां'

(ग) वैज्ञानिक वानिकी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-111, प्रश्न 3

(घ) प्रदूषण और कानून

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-35, पृष्ठ-176, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारतीय उपमहाद्वीप के पर्यावरणीय इतिहास
(Environmental Histories of the Indian Subcontinent)

अंत:विषयक दृष्टिकोण
(Inter-disciplinary Approaches)

1

परिचय

पर्यावरण इतिहास इस बात का अध्ययन है कि मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया किस तरह से एक-दूसरे से बातचीत करते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह क्षेत्र इस बात पर केंद्रित है कि लोगों ने किस तरह से प्रकृति को आकार दिया है और बदले में, प्रकृति ने मानव जीवन को किस तरह से आकार दिया है। इतिहासकार विलियम क्रोनन इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि प्रकृति मानवीय गतिविधियों से गहराई से प्रभावित होती है।

चूँकि यह विषय बहुत व्यापक और जटिल है, इसलिए पर्यावरण के इतिहास को समझने के लिए अक्सर विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे कई विषयों के विचारों और विधियों का उपयोग करना पड़ता है। परंपरागत रूप से, अध्ययन पर्यावरण के विशिष्ट पहलुओं, जैसे कि वन या वन्यजीवों पर केंद्रित होते थे, लेकिन अब यह माना जाता है कि ये तत्व आपस में जुड़े हुए हैं। मानव-प्रकृति संबंधों को सही मायने में समझने के लिए, बड़ी तस्वीर को देखना आवश्यक है।

अध्याय का विहंगावलोकन

पर्यावरण इतिहास की विशिष्ट विशेषताएँ

पर्यावरण इतिहास का अध्ययन अंत:विषय दृष्टिकोण की आवश्यकता को उजागर करता है। मानव पारिस्थितिकी पदचिह्नों को समझने के लिए कठोर अनुशासनात्मक सीमाओं से परे जाना शामिल है, विशेष रूप से भारत की पर्यावरणीय प्रक्रियाओं के संदर्भ में। पर्यावरण को केवल ऐतिहासिक बनाने के बजाय, हमें भारत के पारिस्थितिकी तंत्र की जटिलताओं और मानवीय महत्त्वाकांक्षाओं और विफलताओं के साथ उनके अंतर्संबंध को समझने के लिए इसे दीर्घकालिक संदर्भ में भी रखना चाहिए।

अंतर-विशेषज्ञता

हाल के दशकों में ग्रह के बारे में हमारी समझ बदल गई है, जिसमें पृथ्वी के एक एकीकृत प्रणाली के रूप में अध्ययन पर जोर दिया गया है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण के इतिहास का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न विषयों से ज्ञान को जोड़ता है। प्रारंभ में, इतिहासकारों ने मानव गतिविधियों और भूगोल पर ध्यान केंद्रित किया, अक्सर प्राकृतिक संसाधनों और कृषि उत्पादन की जांच की।

पर्यावरण इतिहास की शुरुआत–विभिन्न दृष्टिकोण

प्रकृति की सुरक्षा और संरक्षण की चिंता, साथ ही पिछली सभ्यताओं के पतन के पीछे के कारणों की खोज ने पर्यावरण इतिहास के उद्भव को प्रेरित किया है। यह विकास मुख्य रूप से सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में पश्चिमी यूरोपीय प्रकृतिवादियों, डॉक्टरों और प्रशासकों के साथ शुरू हुआ, जिन्होंने अपरिचित उष्णकटिबंधीय वातावरण का सामना किया।

पर्यावरणवाद उन्नीसवीं सदी के मध्य से बीसवीं सदी के मध्य तक ऐतिहासिक भूगोल के रूप में विकसित हुआ। 1955-56 में प्रिंसटन में एक संगोष्ठी के दौरान एक महत्त्वपूर्ण क्षण आया, जिसके परिणामस्वरूप विलियम एल. थॉमस जूनियर द्वारा संपादित दो-खंडों वाला संकलन 'पृथ्वी का चेहरा बदलने में मनुष्य की भूमिका' सामने आया।

1960 के दशक तक, रेचल कार्सन की कृतियाँ, विशेष रूप से 'साइलेंट स्प्रिंग' (1962) ने पर्यावरणवाद को मुख्यधारा के आंदोलन में बदल दिया, जिससे रासायनिक कीटनाशकों के खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ी। स्टॉकहोम में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के दौरान बारबरा वार्ड और रेने डुबोइस द्वारा सह-लिखित 'ओनली वन अर्थ' (1972) के प्रकाशन के साथ कार्सन के प्रभाव को और अधिक मान्यता मिली।

पर्यावरण इतिहास की शुरुआत–दक्षिण एशिया

1970 के दशक में इसके उदय के बाद, 1980 के दशक के अंत में दक्षिण एशिया में पर्यावरण इतिहास में रुचि बढ़ी। डोनाल्ड वर्स्टर ने पर्यावरणवाद को संरक्षण आंदोलन से जोड़ा, यह सुझाव देते हुए कि शुरुआती संरक्षण प्रयास वन भूमि पर केंद्रित थे, जिन्हें अक्सर लकड़ी और राजस्व के लिए प्राथमिकता दी जाती थी। उन्होंने तर्क दिया कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पर्यावरण आंदोलन प्रदूषण और स्वास्थ्य के बारे में चिंताओं की ओर मुड़ गए।

एलिजाबेथ व्हिटकॉम्ब ने उन्नीसवीं सदी में उल्लेख किया था कि अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा सिंचाई परियोजनाओं के कारण लवणीकरण और पारिस्थितिकी तंत्र का क्षरण हुआ, जिससे उनके आर्थिक विकास के लक्ष्य विफल हो गए। लक्ष्मण सत्या ने इस तर्क को पुष्ट किया कि औपनिवेशिक राज्य पर्यावरणीय संकटों के लिए जिम्मेदार था, विशेष रूप से मवेशियों से समृद्ध बरार क्षेत्र में, इस धारणा को खारिज करते हुए कि अकाल और बीमारी केवल प्राकृतिक परिणाम थे।

जॉन रिचर्ड्स, एडवर्ड हेन्स और रिचर्ड ग्रोव सहित कई इतिहासकारों ने समय के साथ भूमि-उपयोग परिवर्तनों के अपने विश्लेषण के माध्यम से भारत के शुष्क क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण मरुस्थलीकरण के मिथक को चुनौती दी है। रिचर्ड्स का तर्क है कि मानव-प्रेरित पर्यावरणीय परिवर्तन को केवल पारिस्थितिक क्षरण के रूप में देखना पारिस्थितिकी तंत्र के लचीलेपन को कमजोर करता है और मिट्टी के कटाव जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं की तुलना में मानवीय प्रभावों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करता है।

नारीवादी राजनीतिक पारिस्थितिकी और पारिस्थितिकी-नारीवाद सहित महिलाओं के पर्यावरण आंदोलनों ने इस संदर्भ में महत्त्व प्राप्त किया है। बीना अग्रवाल भौतिक वास्तविकताओं के आधार पर प्रकृति के साथ संबंधों को समझने की आवश्यकता पर जोर देती हैं, जबकि वंदना शिवा स्थानीय अधिकारों और प्रबंधन प्रथाओं को कमजोर करने के लिए औपनिवेशिक वानिकी की आलोचना करती हैं।

विघटन और व्यवधान से परे जाना

भारत में पर्यावरण के इतिहास को 'गरीबों के पर्यावरणवाद' ने आकार दिया है, जो पर्यावरण संबंधी व्यवधानों को मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों पर औपनिवेशिक नियंत्रण के लिए जिम्मेदार ठहराता है। जबकि औपनिवेशिक हस्तक्षेप महत्त्वपूर्ण था, माधव द्वारा सुझाए गए 'प्रकृति के साथ पूर्व-औपनिवेशिक मानव सद्भाव' की अवधारणा का समर्थन करना चुनौतीपूर्ण है।

प्राचीन भारतीय सभ्यता पर शोध से जलवायु परिवर्तनशीलता और बदलते मानसून पैटर्न के प्रमाण सामने आए हैं। पूर्व-औपनिवेशिक काल के अध्ययनों ने परिदृश्यों और जल परिदृश्यों में परिवर्तनों का पता लगाया है। इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास के पारंपरिक विभाजन पर सवाल उठाना शुरू कर दिया है, यह प्रस्तावित करते हुए कि पर्यावरणीय इतिहास सिर्फ टूटने से कहीं अधिक को शामिल करता है।

मानव-पशु संबंधों के अध्ययन ने महत्त्व प्राप्त कर लिया है, जैसा कि विभिन्न प्रकाशनों में देखा गया है जो आर्थिक कारकों से परे इन संबंधों का पता लगाते हैं। महत्त्वपूर्ण कार्यों ने इस गतिशीलता की जांच की है, प्राकृतिक दुनिया के साथ मानव संबंधों की जटिलता को उजागर किया है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. क्या आप सहमत हैं कि पर्यावरणीय इतिहास अंत:विषयक है? उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से जाँचें।

उत्तर–पर्यावरण इतिहास निस्संदेह एक अंत:विषयक चरित्र का प्रतीक है, क्योंकि यह विभिन्न समय अवधियों में मानव समाजों और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच गतिशील संबंधों की जांच करता है। यह क्षेत्र इतिहास, पारिस्थितिकी, भूगोल, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र सहित कई विषयों पर आधारित है, जो एक साथ मिलकर इस बात की व्यापक समझ प्रदान करते हैं कि मनुष्य ने अपने पर्यावरण के साथ कैसे बातचीत की है। विभिन्न दृष्टिकोणों से पर्यावरण इतिहास का विश्लेषण करने से विद्वानों को इन अंत:क्रियाओं की जटिलताओं और पिछले समाजों और समकालीन मुद्दों दोनों के लिए उनके निहितार्थों को उजागर करने में मदद मिलती है।

पर्यावरण इतिहास की अंत:विषय प्रकृति का एक मार्मिक उदाहरण अमेरिका में औपनिवेशिक भूमि उपयोग का अध्ययन है। इतिहासकार इस बात की जांच करते हैं कि यूरोपीय उपनिवेशवाद ने उन परिदृश्यों और पारिस्थितिकी तंत्रों को कैसे बदल दिया, जिन्हें स्वदेशी लोगों ने सदियों से प्रबंधित किया था। इस जांच में अक्सर स्वदेशी आबादी की कृषि प्रथाओं की जांच शामिल होती है, जो उनकी स्थायी भूमि प्रबंधन तकनीकों को समझने के लिए मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से आकर्षित होती है। पारिस्थितिक ज्ञान को एकीकृत करके, विद्वान यूरोपीय कृषि प्रथाओं और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करने वाली गैर-देशी प्रजातियों के परिचय के पर्यावरणीय प्रभावों का आकलन कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्तरी अमेरिका में, यूरोपीय बसने वाले गेहूं जैसी फसलें और पशुधन लेकर आए, जिससे परिदृश्य में बुनियादी बदलाव आया, जिससे वनों की कटाई और मिट्टी की कमी हुई। पर्यावरण इतिहासकार इन गहन परिवर्तनों को दर्शाने के लिए पारिस्थितिक अध्ययनों के साथ-साथ भूमि अनुदान और कृषि अभिलेखों जैसे ऐतिहासिक दस्तावेजों का विश्लेषण करते हैं। यह दोहरा दृष्टिकोण न केवल उपनिवेशीकरण की ऐतिहासिक समयरेखा को उजागर करता है, बल्कि आज भी कायम रहने वाले स्थायी पारिस्थितिक परिणामों को भी दर्शाता है।

पर्यावरण इतिहास का एक और महत्त्वपूर्ण क्षेत्र शहरी पर्यावरण पर औद्योगीकरण के प्रभावों की जांच करना है, विशेष रूप से 19वीं शताब्दी में। लंदन और मैनचेस्टर जैसे शहर ऐसे मामले दर्शाते हैं जहां औद्योगिक विकास के परिणामस्वरूप महत्त्वपूर्ण वायु और जल प्रदूषण हुआ। पर्यावरण इतिहासकार औद्योगिक क्रांति के दौरान प्रदूषण में वृद्धि का दस्तावेजीकरण करने के लिए सरकारी रिपोर्ट और साहित्यिक विवरणों सहित ऐतिहासिक अभिलेखों का उपयोग करते हैं। इस ऐतिहासिक विश्लेषण के साथ-साथ, विद्वान वैज्ञानिक अध्ययनों को शामिल करते हैं जो सार्वजनिक स्वास्थ्य पर प्रदूषकों के प्रतिकूल प्रभावों का विवरण देते हैं, जिससे उद्योग और पर्यावरण के बीच संबंधों की अधिक समग्र समझ बनती है।

उदाहरण के लिए, 1952 का लंदन का कुख्यात 'ग्रेट स्मॉग' एक केस स्टडी के रूप में कार्य करता है, जहाँ ऐतिहासिक आख्यान और पर्यावरण विज्ञान एक दूसरे से जुड़ते हैं। स्मॉग और उसके सार्वजनिक स्वास्थ्य नतीजों के लिए जिम्मेदार सामाजिक-आर्थिक कारकों की खोज करके, इतिहासकार 1956 के स्वच्छ वायु अधिनियम जैसे पर्यावरण सुधारों की शुरुआत का विश्लेषण कर सकते हैं। विषयों का यह एकीकरण औद्योगिक प्रथाओं के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

दीर्घकालिक परिणामों पर प्रकाश डालता है, यह दर्शाता है कि इतिहास पर्यावरणीय स्वास्थ्य और शहरी नियोजन के बारे में समकालीन नीति चर्चाओं को कैसे सूचित करता है।

पर्यावरण इतिहास भी पर्यावरण न्याय के क्षेत्र के साथ महत्त्वपूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है। यह क्षेत्र हाशिए पर पड़े समुदायों पर पर्यावरणीय खतरों के असंगत प्रभाव को संबोधित करता है। इस क्षेत्र के विद्वान समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान से अंतर्दृष्टि को जोड़ते हैं, ऐतिहासिक भूमि उपयोग नीतियों और संस्थागत प्रथाओं का विश्लेषण करते हैं जिन्होंने असमानताओं को कायम रखा है। उदाहरण के लिए, विषाक्त अपशिष्ट स्थलों का ऐतिहासिक स्थान अक्सर प्रणालीगत नस्लवाद और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दर्शाता है, जिससे इन मुद्दों की ऐतिहासिक दृष्टि से जांच करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

आधुनिक जलवायु संकट के संदर्भ में, संसाधनों के दोहन और सामाजिक लचीलेपन के बारे में अतीत से प्राप्त सबक वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों को समझने के लिए आवश्यक हैं। पर्यावरण इतिहासकार पर्यावरणीय गिरावट के प्रति ऐतिहासिक प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण कर सकते हैं , स्थिरता और न्याय की दिशा में आज के आंदोलनों के साथ समानताएं और विरोधाभास खींच सकते हैं।

निष्कर्षत:, पर्यावरण इतिहास का अंत:विषय चरित्र मनुष्यों और पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों की व्यापक समझ के लिए महत्त्वपूर्ण है। ऐतिहासिक आख्यानों को पारिस्थितिक अंतर्दृष्टि, सांस्कृतिक विश्लेषण और सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों के साथ एकीकृत करके, विद्वान इस बात पर एक सूक्ष्म दृष्टिकोण विकसित करते हैं कि कैसे पिछले कार्य हमारे वर्तमान और भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों को आकार देते हैं। यह अंत:विषय दृष्टिकोण न केवल इतिहास की हमारी समझ को समृद्ध करता है, बल्कि स्थिरता, समानता और पर्यावरणीय गिरावट की चल रही चुनौतियों पर समकालीन बहस को भी सूचित करता है। ऐसे एकीकृत अध्ययनों के माध्यम से, हम पिछली गलतियों से सीख सकते हैं और भविष्य की कार्रवाइयों का मार्गदर्शन कर सकते हैं जो हमारे पर्यावरण के साथ अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ बातचीत को बढ़ावा देते हैं।

प्रश्न 2. पर्यावरणीय संकट के कारण और आगे का मार्ग क्या है?

उत्तर–पर्यावरण संकट एक बहुआयामी मुद्दा है, जो कई तरह के परस्पर जुड़े कारणों से उत्पन्न होता है। प्रभावी समाधान तैयार करने के लिए इन कारणों को समझना आवश्यक है। संकट में योगदान देने वाले कुछ प्राथमिक कारक इस प्रकार हैं–

1. जलवायु परिवर्तन–यह घटना मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों, विशेष रूप से कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने से प्रेरित है। इन गतिविधियों से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन जैसी ग्रीनहाउस गैसों (जीएचजी) की महत्त्वपूर्ण मात्रा निकलती है। समय के साथ, यह संचय ग्लोबल वार्मिंग की ओर ले जाता है, जिसके परिणामस्वरूप कई पर्यावरणीय प्रभाव होते हैं, जिसमें समुद्र का बढ़ता स्तर, चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति जैसे तूफान, सूखा और बाढ़ और विभिन्न पारिस्थितिकी प्रणालियों में व्यवधान शामिल हैं। बदलती जलवायु पशु प्रजातियों के प्रवास पैटर्न को बदल सकती है और कृषि उत्पादकता को प्रभावित कर सकती है, जिसके परिणामस्वरूप खाद्य असुरक्षा होती है।

2. वनों की कटाई–कृषि, कटाई और शहरी विकास के लिए जंगलों की व्यापक कटाई के गंभीर परिणाम हैं। वन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने, जैव विविधता को बनाए रखने और जल चक्रों को विनियमित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब पेड़ों को हटा दिया जाता है, तो न केवल कार्बन भंडारण क्षमता कम हो जाती है, बल्कि कई प्रजातियों के आवास भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे जैव विविधता का नुकसान होता है। इसके अलावा, वनों की कटाई मिट्टी के कटाव में योगदान देती है और स्थानीय समुदायों को प्रभावित करती है जो अपनी आजीविका के लिए इन पारिस्थितिकी प्रणालियों पर निर्भर हैं।

3. प्रदूषण–वायु, जल और मिट्टी के विभिन्न रूपों में प्रदूषण मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण अखंडता दोनों के लिए गंभीर चुनौतियां पेश करता है। वायु प्रदूषण, मुख्य रूप से वाहनों के उत्सर्जन और औद्योगिक उत्सर्जन से, श्वसन संबंधी बीमारियों और अम्लीय वर्षा जैसे पर्यावरणीय मुद्दों को जन्म दे सकता है। कृषि अपवाह, प्लास्टिक अपशिष्ट और औद्योगिक उत्सर्जन से होने वाला जल प्रदूषण मीठे पानी की आपूर्ति को प्रभावित करता है और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को बाधित करता है। रसायनों और भारी धातुओं से मिट्टी का प्रदूषण भूमि को कृषि उपयोग के लिए अनुपयुक्त बना सकता है, जिससे खाद्य सुरक्षा संबंधी मुद्दे और भी गंभीर हो सकते हैं।

4. अत्यधिक जनसंख्या–जैसे-जैसे वैश्विक जनसंख्या बढ़ती जा रही है, जिसके 2050 तक लगभग 10 बिलियन तक पहुँचने की उम्मीद है; संसाधनों की मांग बढ़ती जा रही है। अत्यधिक जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों की खपत बढ़ रही है, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र अपनी पुनर्जनन क्षमता से बाहर जा रहा है। यह स्थिति अधिक अपशिष्ट और प्रदूषण में भी योगदान देती है, शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे और सेवाओं पर दबाव डालती है और संसाधन आवंटन को लेकर संघर्षों को जन्म देती है।

5. असंवहनीय कृषि–मोनोकल्चर और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग जैसी गहन कृषि पद्धतियाँ अक्सर मिट्टी के क्षरण और जैव विविधता के नुकसान का कारण बनती हैं। ये प्रथाएँ मिट्टी से आवश्यक पोषक तत्वों को समाप्त कर सकती हैं, जिससे समय के साथ मिट्टी कम उत्पादक बन जाती है और रासायनिक इनपुट पर निर्भरता बढ़ जाती है। इसके अलावा औद्योगिक कृषि अक्सर महत्त्वपूर्ण जल संसाधनों की मांग करती है, जिससे शुष्क क्षेत्रों में पानी की कमी हो जाती है और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र बाधित होता है।

6. अपशिष्ट उत्पादन–आधुनिक समाज में उपभोग का उच्च स्तर है, जिसके कारण बहुत अधिक मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न होता है। कई समुदायों में अक्सर उचित अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों का अभाव होता है, जिसके परिणामस्वरूप लैंडफिल ओवरफ्लो हो जाता है या प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक कचरे जैसे खतरों का अनुचित निपटान होता है। यह न केवल पर्यावरण को प्रदूषित करता है बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरा पैदा करता

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

है। महासागर विशेष रूप से प्लास्टिक कचरे से प्रभावित होते हैं, जो समुद्री जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचाता है।

आगे का रास्ता-

1. नवीकरणीय ऊर्जा में परिवर्तन–जीवाश्म ईंधन से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों–जैसे कि सौर, पवन और जलविद्युत–में परिवर्तन से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में काफी कमी आ सकती है। सरकारों और व्यवसायों को ऐसे बुनियादी ढांचे में निवेश करना चाहिए, जो इन प्रौद्योगिकियों का समर्थन करता हो और व्यक्तियों को स्वच्छ ऊर्जा विकल्प, जैसे कि इलेक्ट्रिक वाहन और 'ऊर्जा-कुशल' घर अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

2. संधारणीय प्रथाएँ–संधारणीय खेती और वानिकी प्रथाओं, जैसे पर्माकल्चर और एग्रोफॉरेस्ट्री को संसाधन संरक्षण बढ़ाने के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए। संधारणीय प्रथाओं पर किसानों और वाणिज्यिक उद्यमों को शिक्षित करने से रसायनों के उपयोग में कमी को बढ़ावा मिलता है और मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है, जो अंततः पारिस्थितिक संतुलन में योगदान देता है।

3. अपशिष्ट प्रबंधन और पुनर्चक्रण–व्यापक अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना जो पुनर्चक्रण, खाद बनाने और एकल-उपयोग प्लास्टिक को कम करने को प्राथमिकता देते हैं, प्रदूषण को काफी कम कर सकते हैं। समुदायों को यह सुनिश्चित करने के लिए परिपत्र अर्थव्यवस्था सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए कि सामग्रियों का पुनः उपयोग और पुनः उपयोग किया जाए, जिससे पर्यावरणीय पदचिह्न कम से कम हो।

4. संरक्षण प्रयास–समर्पित संरक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्राकृतिक आवासों और लुप्तप्राय प्रजातियों की रक्षा करना जैव विविधता के संरक्षण को सुनिश्चित करता है। पहलों में संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना, क्षतिग्रस्त पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करना और प्रजातियों के प्रवास और जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन को सुविधाजनक बनाने के लिए वन्यजीव गलियारों को बढ़ावा देना शामिल हो सकता है।

5. शिक्षा और जागरूकता–शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाना व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बना सकता है। ऐसे कार्यक्रम जो स्कूल के पाठ्यक्रमों या सामुदायिक कार्यशालाओं में स्थिरता को एकीकृत करते हैं, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की संस्कृति को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं, जिससे स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर कार्रवाई को बढ़ावा मिलता है।

6. नीति और कानून–प्रभावी जलवायु कार्रवाई के लिए मजबूत पर्यावरणीय नियम बनाना और लागू करना महत्त्वपूर्ण है। नीति निर्माताओं को टिकाऊ आर्थिक प्रथाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए और सख्त नियमों के माध्यम से उद्योगों को उनके पर्यावरणीय प्रभाव के लिए जवाबदेह बनाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता हानि जैसे सीमा पार मुद्दों को संबोधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी आवश्यक है।

इन मूल कारणों को संबोधित करना और संसाधनों के उपयोग के लिए अधिक समग्र और टिकाऊ दृष्टिकोण अपनाना पर्यावरण संकट को कम करने में आवश्यक होगा। सरकारों, संगठनों और समुदायों के बीच मिलकर काम करके हम वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ पृथ्वी बनाने की दिशा में प्रयास कर सकते हैं।

प्रश्न 3. पर्यावरणीय इतिहास-लेखन और उस समय की पर्यावरणवादिता के बीच निकट संबंध पर टिप्पणी करें।

उत्तर–पर्यावरण इतिहास-लेखन वास्तव में अपने समय के पर्यावरणवाद से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है, जो प्राकृतिक दुनिया के बारे में प्रचलित दृष्टिकोण, चिंताओं और मूल्यों को दर्शाता है। इस संबंध को कई तरीकों से देखा जा सकता है–

1. प्रासंगिक प्रभाव–पर्यावरण आंदोलनों की चिंताएँ अक्सर उन विषयों को आकार देती हैं, जिन्हें इतिहासकार तलाशते हैं। उदाहरण के लिए, प्रदूषण और संरक्षण के बारे में बढ़ती जागरूकता की अवधि के दौरान, ऐतिहासिक कथाएँ औद्योगिकीकरण के प्रभावों या संरक्षण आंदोलनों के विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं।

2. बदलते परिप्रेक्ष्य–जैसे-जैसे पर्यावरणवाद विकसित होता है, वैसे-वैसे ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या भी विकसित होती है। प्रारंभिक पर्यावरण इतिहासकारों ने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर जोर दिया होगा, जबकि समकालीन इतिहासकार वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के मद्देनजर पिछले प्रथाओं का पुनर्मूल्यांकन करते हुए स्थिरता और पारिस्थितिक चेतना पर विचार कर सकते हैं।

3. सांस्कृतिक प्रतिबिंब–पर्यावरण इतिहास न केवल पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का दस्तावेजीकरण करता है, बल्कि प्रकृति के बारे में सामाजिक मूल्यों और नैतिक विचारों को भी दर्शाता है। हम अपने अतीत के बारे में जो कहानियाँ सुनाते हैं, वे अक्सर पर्यावरण के साथ मानवता के संबंधों के बारे में अंतर्निहित सांस्कृतिक आख्यानों को प्रकट करती हैं, जो उस समय की प्रमुख पर्यावरणीय विचारधाराओं से प्रभावित होती हैं।

4. नीति और सक्रियता–पर्यावरण इतिहास सक्रियता के लिए एक उपकरण के रूप में काम कर सकता है, जो वर्तमान पर्यावरण नीतियों को ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करता है। पिछले पर्यावरण आंदोलनों को समझना वर्तमान समय की सक्रियता और नीति-निर्माण को प्रेरित कर सकता है, जो समकालीन प्रयासों को सूचित करने वाली सफलताओं और असफलताओं को दर्शाता है।

5. अंतःविषयक संबंध–पर्यावरण इतिहास अक्सर पारिस्थितिकी, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे अन्य विषयों के साथ जुड़ता है, जिससे समृद्ध आख्यान सामने आते हैं, जो समकालीन पर्यावरणीय चुनौतियों के आधार पर मानव-पर्यावरण अंतःक्रियाओं की जटिलताओं को समाहित करते हैं।

संक्षेप में, पर्यावरण इतिहास लेखन स्थिर नहीं है; यह पर्यावरणवाद के बदलते परिदृश्य के साथ विकसित होता है। यह न केवल अतीत का दस्तावेजीकरण करता है, बल्कि वर्तमान बहसों से जुड़ने और पर्यावरण संबंधी विचार और नीति में भविष्य की दिशाओं को प्रेरित करने का भी काम करता है। जैसे-जैसे पर्यावरण संबंधी मुद्दे अधिक से अधिक जरूरी होते जा रहे हैं, ऐतिहासिक संदर्भ की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है, जो इतिहास की परस्पर संबद्धता और पारिस्थितिकी जागरूकता और न्याय के लिए चल रहे संघर्ष को उजागर करती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. पर्यावरण इतिहास का प्राथमिक फोकस क्या है?

(क) प्राचीन सभ्यताओं का अध्ययन

(ख) मानव और प्राकृतिक दुनिया के बीच संबंध

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com